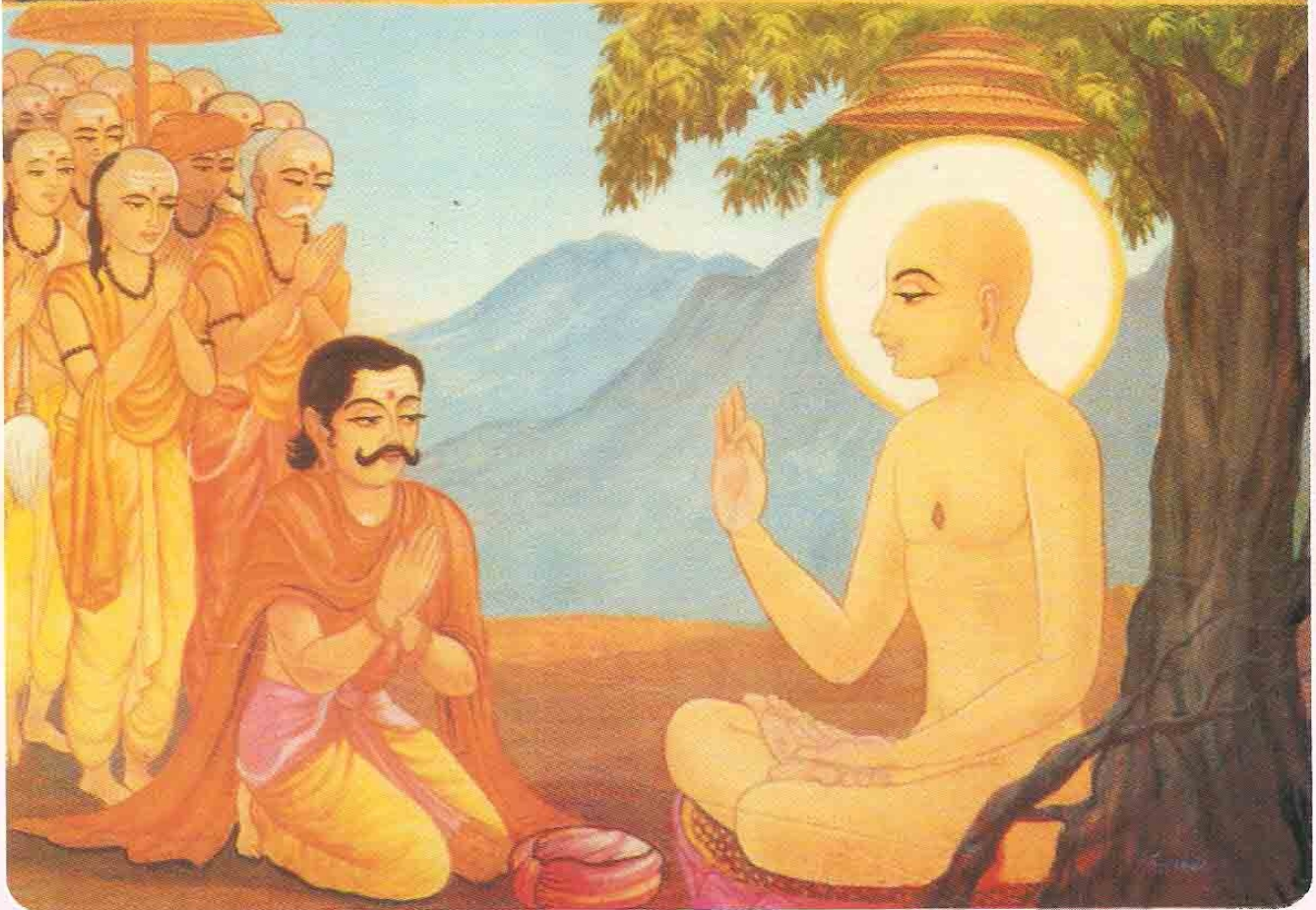
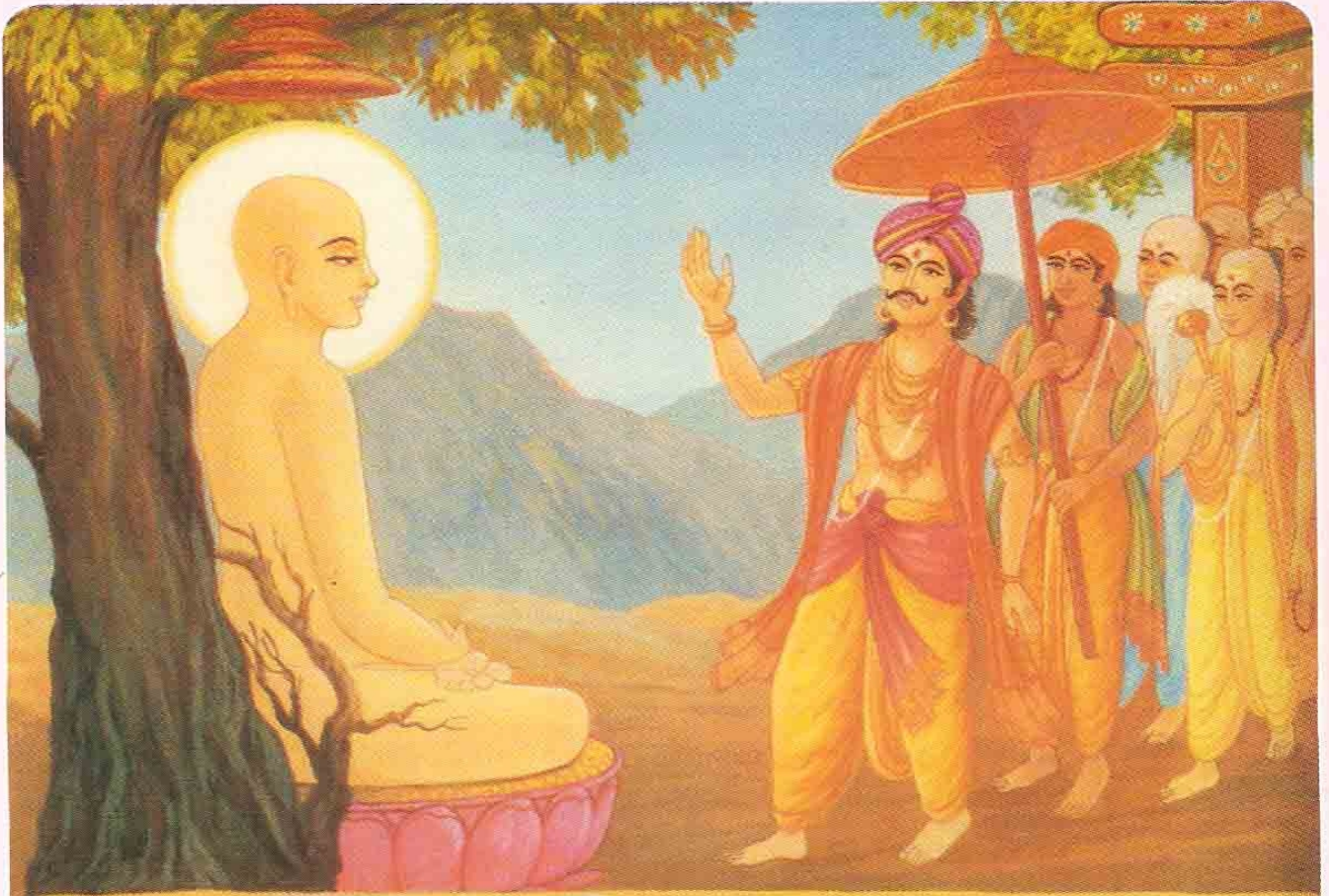
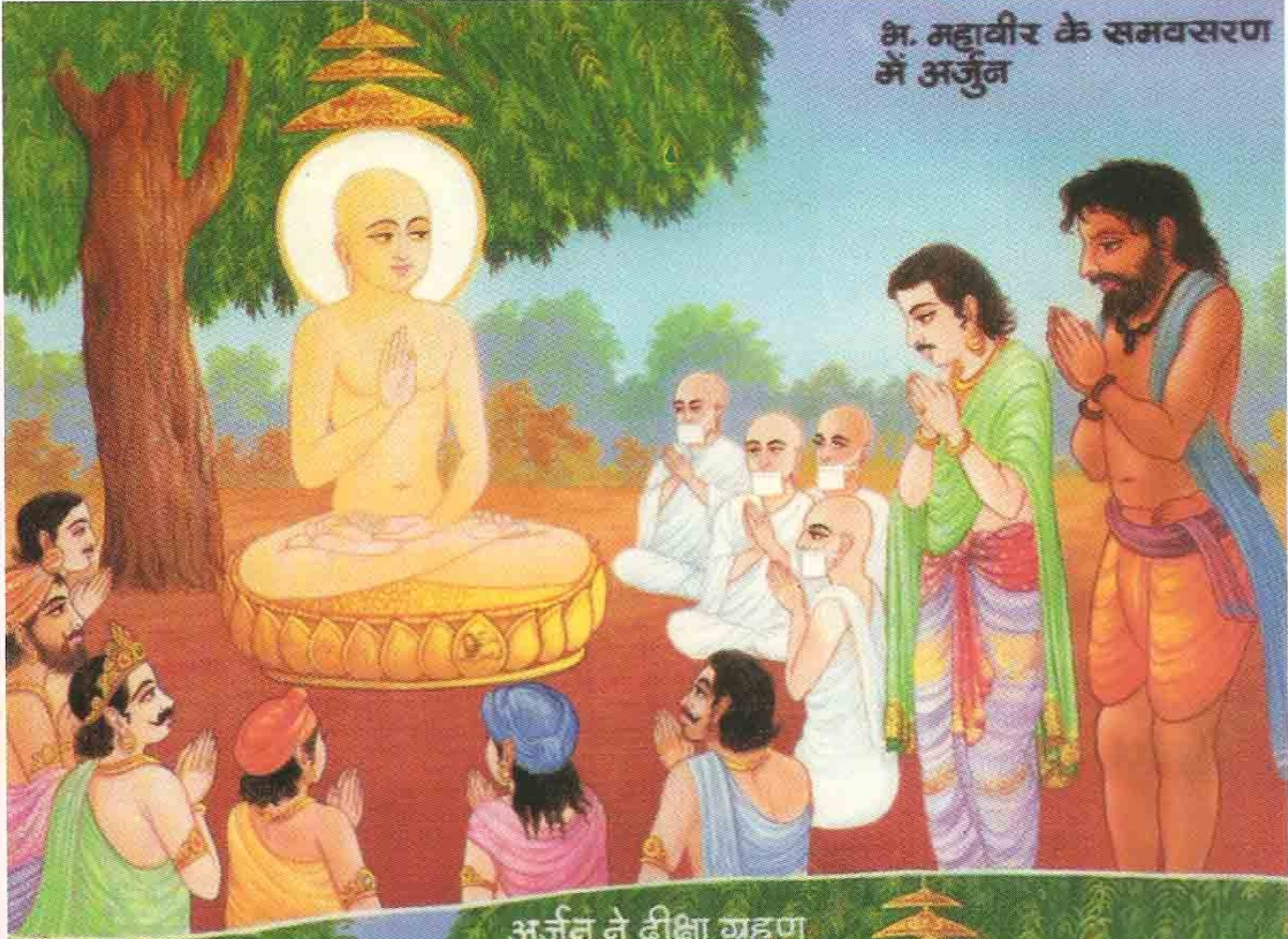


अपने बैलों का पता नहीं लगने से ग्वाले ने प्रभु को ही दोषी समझकर उनके कानों में कीलें ठोक दी। तब सिद्धार्थ व ग्वाले ने आकर प्रभु के कानों की कीलें निकलवाई।

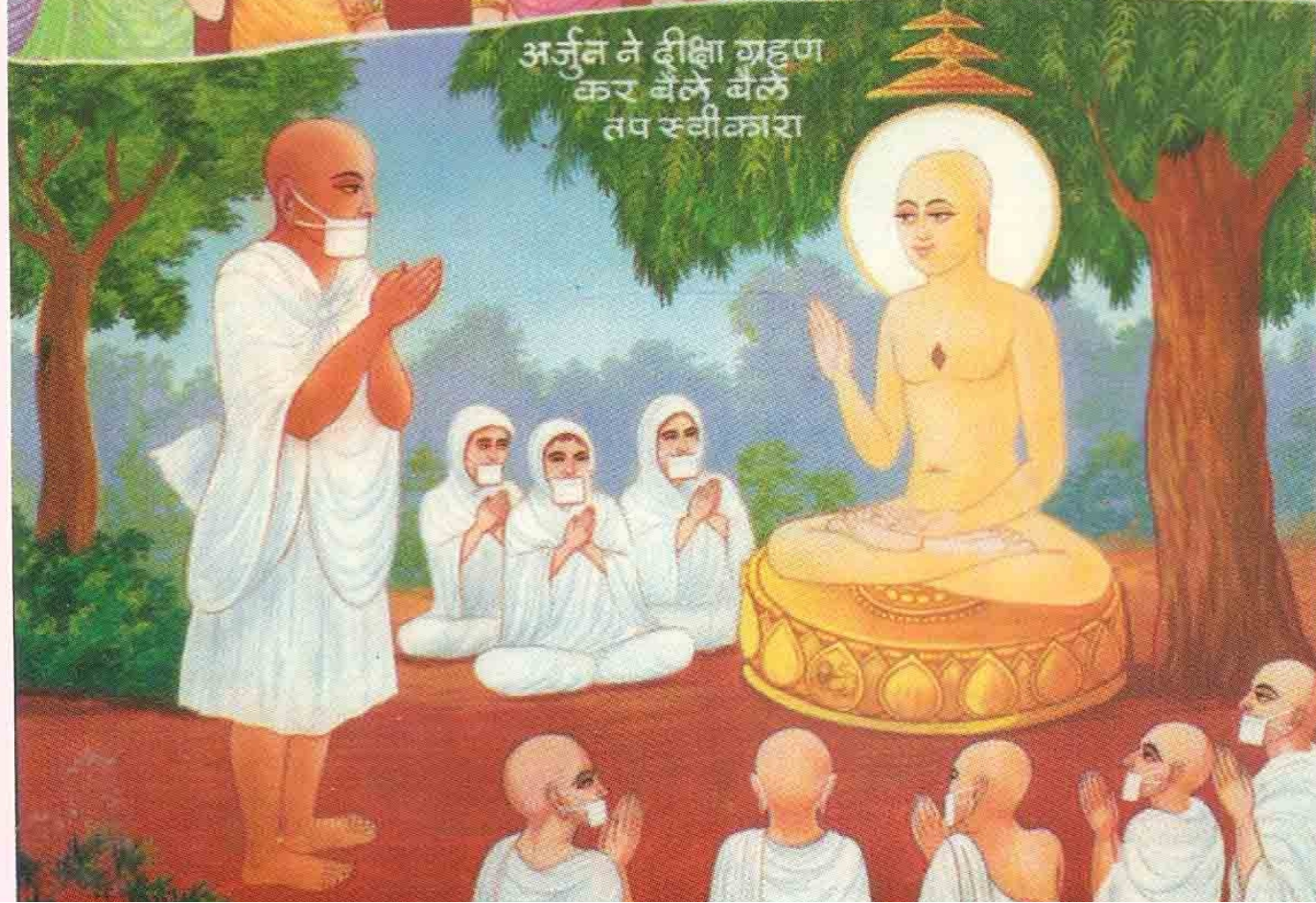


इन्द्रभूति का आगमन और महावीर के चरणों में सर्वात्मना समर्पण।

श्री. महावीर के समवसरण में अर्जुन



अर्जुन ने दीक्षा ग्रहण कर बैले बैले तप स्वीकारा





भगवान महावीर का समवसरण